National Conference on Recent Trends in Engineering, Science, Humanities and Management (NCRTESHM – 2023)
29th January, 2023, West Bengal, India.

CERTIFICATE NO : NCRTESHM /2023/C0123194

प्रकृति के प्रति टैगोर के आकर्षण की पृष्ठभूमि का अध्ययन

KIMMI

Research Scholar, Ph. D in Philosophy
Mansarovar Global University, Bilkisganj, M.P.

सारांश

यदि हम टैगोर के प्रकृति के प्रति आकर्षण के पीछे के कारणों पर गौर करें तो हमें दो महत्वपूर्ण घटनाएं मिलती हैं जिन्होंने उन्हें आंतरिक रूप से आकर्षित होने और प्रकृति के करीब आने के लिए प्रेरित किया। सबसे पहले, उन्हें अपने पिता महर्षि देबेंद्रनाथ टैगोर से प्रकृति के प्रति प्यार और सम्मान विरासत में मिला, जो अक्सर विभिन्न उद्देश्यों के लिए अलग–अलग स्थानों की यात्रा करते थे। एक बार टैगोर को भी 1873 में अपने पिता के साथ हिमालय जाने का मौका मिला। जब वह पहली बार हिमालय गए तो खुली प्रकृति की विविध सुंदरता को देखकर काफी उत्साहित हुए। हिमालय के ऊंचे, सुंदर प्राकृतिक परिवेश के प्रत्यक्ष स्पर्श का टैगोर पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। उसे अपने हृदय में कुछ अतिरिक्त भावनाओं का एहसास हुआ जिन्हें वह शब्दों के रूप में व्यक्त नहीं कर सका। उन्होंने प्रकृति की सुंदरता का पूरा आनंद लिया और उनके पिता ने भी उन्हें प्रकृति की गोद में इधर–उधर घूमने की इजाजत दी। उनके पिता ने उन्हें ऐसा करने से मना नहीं किया था. उनके पिता ने उन्हें प्रकृति के करीब आने की पूरी आजादी दी। टैगोर के विचारों को सकारात्मक क्रम में आकार देने के उनके पिता के नेक इरादे के कारण ही उनमें प्रकृति के प्रति ऐसी भावना विकसित हुई। टैगोर ने अपने संस्मरणों में इसे विस्तार से व्यक्त किया है। उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया: "जिस तरह उन्होंने मुझे अपनी इच्छानुसार पहाड़ों पर भटकने की अनुमति दी, उसी तरह उन्होंने मुझे सत्य की खोज में अपना रास्ता चुनने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया"। वह यात्रा टैगोर के लिए एक महान सबक थी क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए प्रकृति सबसे अच्छी जगह है। उस यात्रा ने टैगोर को स्वतंत्रता और जिम्मेदारियों की भावना विकसित करने में भी मदद की।